प्रथम अध्याय

किसी भी साहित्यकार के कृतित्व को उसके व्यक्तिगत जीवन एवं अनुभावोंसे पृथक् करके नहीं देखा जा सकता। क्यों कि, उसके विचार एवं भावनाएँ उसके जीवन की ही प्रतिच्छाया होती है। वह युग की परिस्थिततियों एवं समाजगत भावनाओंसे विमुख होकर साहित्य-सृजन में सफल नहीं हो सकता। उसने किन परिस्थितियों और भावनाओं तथा विचारों से प्रेरित होकर साहित्य का सृजन किया है, यह जानने के लिए उसके वास्तविक जीवन का यथार्थ परिचय आवश्यक है। इसलिए यहाँ यशपाल की जीवनी एवं व्यक्तित्व पर संक्षेप में प्रकाश डाला जा रहा है। यशपाल के जीवन के दो पक्ष स्पष्ट रूपसे दिखाई देते हैं। पहला पक्ष है - क्रांतिकारी और दूसरा साहित्यिक। उनके व्यक्तित्व को उसकी समग्रता में समझाने के लिए जीवन के विभिन्न पक्षोंपर दृष्टि डालना आवश्यक है।

यशपाल की जीवनी एवं व्यक्तित्व

यशपाल का जन्म एवं पारिवारिक स्थिति :-

हिन्दी के विख्यात साहित्यिक एवं श्रेष्ट क्रांतिकारी यशपाल का जन्म ३ दिसंबर १९०३ को फिरोजपुर छावनी में हुआ। फिरोजपुर में उनकी माता प्रेमादेवी एक अनाथालय में अध्यापिका थी। यशपाल के पिता हीरालालजी हिमाचलमें हमीरपुरके भुम्पल

गाँवमें रहते थे। यशपाल के पूर्वज कांगडा जिलेके निवासी थे। परिवार के सम्बन्ध में कहा है - " एक कच्चे मकान और दूकान के सिवा कोई विशेष सम्पत्ति उनके पास नहीं थी और वे सूदपर पैसा उधार दिया करते थे।"[1] उनकी प्रतिष्ठा और सम्मान के कारण लोग "लाला" पुकारते थे। पिता की कंजूस स्थिति देखकर यशपाल को हीनता का एहसास होता था। हीरालाल ने अपनी प्रौढावस्था में शादी की थी और प्रेमादेवी अपने आपको शाम चौरासी के मंत्रियों के वंश से उत्पन्न मानती थी। इसवक्तयही कारण था कि प्रेमादेवी अलग से नौकरी करके रहने लगी। प्रेमादेवी साहसी प्रवृत्ति, सहनशील, परिश्रमी एवं धार्मिक स्त्री थी। पति की मृत्यु होने के पश्चात कांगडा आना जाना समाप्त हो गया। प्रेमादेवी ने अपने संरक्षण में धर्मपाल और यशपाल का पालन - पोषण किया। माता की प्रेरणा से आर्य समाज से प्रभावित होने के कारण यशपाल को दयानंद का सच्चा सैनिक बनाने के लिए गुरुकुल कांगडा में शिक्षित करने का निर्णय माँ ने लिया।

शिक्षा - दीक्षा - गुरुकुल जीवन :-

यशपाल की माता प्रेमादेवी कट्टर आर्यसमाजी थी तथा उनका संपूर्ण जीवन आर्य समाजी वातावरण में बीता था। वह अपने बेटे को - " समाज सुधारक स्वामी दयानन्द के आदर्शों के अनुकूल आर्य धर्मका तेजस्वी और ब्रह्मचारी बना देने के उद्देश्य "[2] से सात आठ वर्ष की आयुमें गुरुकुल कांगडा में प्रविष्ठ कर वहाँ सातवी कक्षा तक शिक्षा दी। गुरुकुल का यह सप्तवर्षीय जीवन यशपाल के व्यक्तित्व निर्माण में और भविष्य को उजागर बनाने में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

गुरुकुल में यशपाल रोगग्रस्त होने से माँ नें उन्हे सन १९१७ में लाहोर के डी.ए.वी. स्कूल में भर्ती कराया। यहाँ " अन्दमान की गूँज " "आनन्द मठ" आदि किताबे पढ़नेसे उनमें राष्ट्रियता की चिनगारी प्रज्वलित हुई। यशपाल माँ के साथ लाहोर से " छावनी " आ गये वहाँ मिडिल स्कूल की परीक्षामें उत्तीर्ण होनेपर १९२१ कों मनोहरलाल मेमोरियल हाईस्कूल में मैट्रिक की परीक्षामें जिलेमें अव्वल आये। यशपाल फिरोजपुर के आर्य समाज मंदिर के कार्यों में - भजन, कीर्तन, अध्यापन आदि में दिलचस्पी लेने लगे थे। समाजद्वारा चलाई गई रात्रि की पाठशाला में अछूत बच्चोंको पढ़ाने का कार्य करने लगे। उन्हे वहाँ प्रधानाध्यापक के रूपमें मासिक वेतन ८ रूपये पर नियुक्त किया। यह उनकी पहली कमाई थी।

सन १९२१ में " असहयोग आन्दोलन " की धूम सारे देश में फैलनेसें युवा वर्ग इस ओर जोरों के साथ आकर्षित हुये लेकिन सन १९२२ में " चौरी चौरा " में जनता और पुलिस संघर्ष सें गांधीजीनें देश कों हिंसा से बचाने के लिए " असहयोग आन्दोलन " वापस लिया। गांधीजी कें इस निर्णयसें कार्यकर्ताओं में तथा यशपाल में नैराश्य का वातावरण निर्माण हुआ।

गांधीजीका आन्दोलन वापस लेने के निर्णय से यशपालजीनें अपनी ईच्छासे सन १९२२ में नेशनल कॉलेजमें प्रवेश लिया। यहाँ उनकी भेंट क्रांतिकारी भगतसिंह तथा सुखदेव सें हुई। इनके प्रभाव से देश के लिए समर्पण करने की प्रतिज्ञा यशपालने अपनें कॉलेज जीवन में ही की। इन्ही दिनों प्रो. जयचन्दजी विद्यालंकार

से क्रांति की ओर उदयशंकर भट्ट से साहित्यकी प्रेरणा उन्हे बराबर मिलती रही। बंदुक और कलम को उन्होंने एक साथ अपना लिया। सन १९२५ में नेशनल कॉलेज में बी.ए. और पंजाब युनिवर्सिटी से " प्रभाकर " की परीक्षा पास की। इस प्रकार अपने समकालीन साहित्यकारों में यशपाल की शिक्षा का स्तर काफी उँचा कहा जा सकता है।

भगतसिंह और सुखदेव पढ़ाई छोड कर क्रांतिकारी दल का गुप्त कार्य करने के लिए फरार हुए, लेकिन यशपाल वहीं अध्यापक होकर कार्य करते रहे। सन १९२९ के दिसंबर में साईमन कमिशन का बायकाट करते समय लाला लजपतराय पर लाठीचलाने वाले सार्जेंट साण्डर्स कों गोळी मार दी गयी और मार्च १९२९ में दिल्ली असेम्बली में भगतसिंह ने बम फेंका। इसी साल लाहौर में एक बम फॅक्टरी का पुलिस को पता लगा। २३ दिसंबर १९२९ के दिन यशपालने वायसराय की गाडी के नीचे बम विस्फोट किया। चंद्रशेखर के शहीद हो जानेपर वे हिंदुस्थानी समाजवादी प्रजातंत्र के कमाण्डर नियुक्त हुए। इसी समय दिल्ली और लाहौर में अनेक मुकदमें चलायें, यशपाल उनके प्रमुख थे इन सभी घटनाओंसे यशपालजी फरार हो गयें यशपाल को पकड़ने के लिए तीन हजार का इनाम एलान कर दिया था इतनी पुलिस यशपाल से डरती थी।

विवाह :-

सन १९३२ को फरवरी में उन्हें पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। "बी" स्तर की सुविधाएँ प्राप्त कर १४ साल के कारावास

में फतेहगढ़ जेल में मन्मथनाथ गुप्त तथा मणींद्र बॅनर्जी के साथ पठन - पाठन शुरू किया। मन्मथनाथ गुप्त इस सम्बन्ध में कहते है - हम लोग नित्य चौदह घंटे के करीब पढ़ते - लिखाते थें। मणींद्र और मैं रूसी पढ़ रहे थे। यशपाल फ्रान्सीसी पढ़ते रहे। फिर वह इटालियन भाषा की ओर मुडे। हम भी उनकी पुस्तकों से इटालियन पढ़ते रहे। संपूर्ण रूपसे पठन - पाठन का जीवन था।

क्रांतिकारी जीवन में " प्रकाशवती " नाम की क्रांतिकारी साथी का परिचय हुआ था। परिवार रूढ़िवादी था, जेल में हुई भेट में एक दुसरे के प्रति निष्ठा का परिचय देते हुऐ कहते है - " जो दात सदा पीड़ा ही दे उसे निकलवाकर दूसरा दात लगवा देना ही न्याय और कर्तव्य है।"[3] यशपाल के प्रति उसकी निष्ठा होने से यशपाल के साथ विवाह करने का इरादा पक्का कर लिया। बरेली के डिस्ट्रिक्ट मॅजिस्ट्रेट की अदालत में उसने कैदी यशपाल के साथ विवाह करने की ईच्छा प्रकट की। मॅजिस्ट्रेट इन्कार नहीं कर सकें, जेल में इतिहास निर्माण करनेवाली यह शादी ७ अगस्त १९३६ को " बरेली " के जेल में संपन्न हुई।

रिहाई :

सन १९३७ की जुलाई में देश के ग्यारह प्रान्तोकी बागडोर कॉंग्रेसी मंत्रिमंडलियों के हाथ में आते ही सरकारने गिरफ्तारियों के वारंट वापस लिये। रफी अहमद किदवई के विशेष प्रयाससें यशपाल २ मार्च, १९३८ को जेल से रिहा हुए। जेल से रिहा होते ही उन्होंने अपना काम शस्त्र के अलावा साहित्य से करूँगा इस प्रकार पत्रकार से कहीं।

सन १९३८ में रिहाई के पश्चात गृहस्थी चलने के लिए नौकरी के तलाशमें उन्होंने " कर्मयोगी " साप्ताहिक पत्रमें उपसंपादक की नौकरी ४०० रुपयें महावार में की। लेकिन नौकरी की गुलामी से तंग आकर " विप्लव " मासिक पत्र का प्रकाशन आरंभ किया। " विप्लव " के प्रकाशन और प्रचार में पत्नी प्रकाशवती का पूरा सहयोग था। सन १९४० में अंग्रेज सरकारने फिर गिरफ्तार किया। सन १९४१ में " विप्लव " के अंकोको बंद कर अपना ध्यान साहित्य निर्मान पर केंद्रित कर साहित्यिक बन गये। सन १९३९ में जेल से छुटने के बाद जेल जीवन में लिखी कुछ कहानियों का संग्रह १९३९ में " पिंजरे की उड़ान" शीर्षक से प्रकाशित किया। फिर जुलाई १९४० में समस्या मूलक लेखोंका संग्रह " न्याय का संघर्ष " प्रकाशित हुआ। सन १९५५ तक उनकी २० किताबोंका प्रकाशन हुआ।

१९७५ तक यशपालने कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध यात्राविवरण आदि गद्यविधाओंका लेखन किया, उस समयतक ४० कृतियाँ प्रकाशित की जिनमें १६ कहानी संग्रह, १२ उपन्यास, ४ राजनैतिक निबंध ग्रंथ, ५ हास्य तथा कथात्मक निबंध, ३ क्रांतिकारी जीवन - संस्मरण खंड, ३ यात्रा विवरण, ६ अनुदित उपन्यास, १ एकांकी संग्रह है। इसमें " दिव्या" "झूटा-सच" उपन्यास और " चित्र का शिर्षक " आदि कहानीयाँ श्रेष्ठ हैं।

विदेश यात्राएँ :-

सन १९५२ से १९७३ तक सात बार विदेश भ्रमण यह यशपालजी के लिए चार चाँद लगानेवाली बात है। इसमें रुस, इंग्लैड,

ऑस्ट्रिया, स्विजरलैण्ड, काबूल और " प्राहा " में यात्राएँ की।

उपाधियाँ तथा सम्मान :-

यशपाल जैसे महान साहित्यिक को तथा उनके साहित्य को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया जिनमें -

१] देव पुरस्कार :

" सर्वश्रेष्ठ रचनात्मक गध्य " विषयपर " देव - पुरस्कार " उनकी कथाकृति " चित्र का शिर्षक " के लिए सन १९५४-५५ में श्री कस्तुरी सन्तानम्, उपराज्यपाल, विंध्य प्रदेश के हाथों प्रदान किया गया।

२] सोवियत लैंड नेहरु पुरस्कार :

१४ नवम्बर १९६९ को दिल्ली में तत्कालिन उपराष्ट्रपति श्री गोपाल स्वरुप पाठकजी के हाथों से अर्पित किया गया।

३] मंगलाप्रसाद पुरस्कार :

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की ओर से " झूठा - सच " के लिए प्रयाग में संवत १८८१ में श्री कमलापति त्रिपाठी कें हाथों प्राप्त हुआ।

४] साहित्य अकादमी पुरस्कार :

सन् १९७६ में सर्वश्रेष्ठ रचना " मेरी तेरी उसकी बात " के लिए प्रदान किया गया।

५] साहित्यवारिधि :

सन १९६७ में " उत्तर प्रदेशीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन " प्रयाग की ओर से मिला।

६] पद्मभूषण :

उस समय के भारत के राष्ट्रपति श्री वराहगिरी ने २१ अप्रैल १९७० में उपाधि प्रदान की।

७] डी. लिट :

सन १९७४ में आगरा विश्व विद्यालय ने उत्तर प्रदेश के राज्यपाल अकबर अली खाँ के हाथों प्रदान की।

८] साहित्य वाचस्पति :

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग की ओर से अमूल्य हिन्दी सेवा का कार्य करनेसे ७ दिसंबर १९७५ में मिला।

इसके सिवा अन्य साहित्य के लिए ताम्रपत्र और सम्मान पत्र देकर उनका सम्मान किया गया। जिनसे यशपालजी का व्यक्तित्व तथा कृतित्व निखार आया।

यशपालजी का देहावसान :-

यशपालजीने अपने जीवन में अनेक मान - सम्मान, उपाधियों, पुरस्कारों के रूपमें संतोषजनक जीवन पाकर मानो उनकी सभी ईच्छाएँ पूरी हो गई थी। " सिंहावलोकन " का चतुर्थ

खण्ड का काम अधुरा था। परंतु यह नियति को मंजुर न था। ७३ वर्ष की आयु में वे अपना अधुरा काम पुरा करना चाहते थे, लेकिन उनका स्वास्थ्य गिरता रहा। अन्तिम दिनों में वे पलंग पर लेटे थे। अन्तिम तीस मिनट में यशपाल के पास पुत्र-वधु मिनाजी और वार्ड मास्टर थे। कुछ ही पलोंमे उन्होंने जिंदगीसे मुँह फेर लिया। वह दिन था २६ दिसम्बर १९७६, समय दोपहर दो बजे थे। एक महान कलाकार का देहावसान हो गया।

व्यक्तित्व

यशपालजी दुबले - पतले थें। उनका चेहरा रोबीला और भौहे घानी थी। अज्ञेजी उनकी इस अवस्था तथा देह - गठन का विवेचन करते हुए लिखाते है - " बढ़िया सुट पहने हुए मंझाले कंद और सावले रंग का एक युवक, सफाई से कटे छटे बाल, चौडे खुले वक्ष, मोटे होंठ, घानी भौहे और चिपके हुए कल्ले। किसी क्रांतिकारी के बदले में यशपाल किसी बिगड़े हुये युवक से लगे।"[4]

अवध नारायण मुदगल भी यशपालके लेखान कार्य में सहायता करते थे। इससे उन्हे देख कर वे कहते है की - "यशपाल जी को देखाकर गोमुखा और सिंह-मुखा को याद आती थी। गोमुख जितना देखाने में सरल होता है उतना सरल अन्दर नहीं होता। लेकि न सिंहमुखा देखाने में सरल नहीं होता उतना ही अन्दर से सरल होता है। संस्कृत की इस कहावत के अनुसार यशपालजी सिंहमुखा थे। "[5] इससे ऐसा स्पष्ट होता है कि, यशपाल के व्यक्तित्व कों देखाकर प्रारंभ में लोग दूर रहते और बाद में निकट संपर्क में आते दिखाई देते

है। यशपालजी कटहल जैसें बाहर से कटीले और अन्दर से मुलायम थे।

मधुरेशजी के मतानुसार यशपालजी के रहन सहनपर पूरा पाश्चात्यों का प्रभाव था -

"बढ़ती उम्र के बावजूद अच्छे ढंग से मिले। उम्दा कपड़े, खूब साफ-सुथरी बड़ी कोठी, मोटर, फ्रीज यानी ऐशो- आराम की हर जरूरी चीज उनके यहाँ थी। हिन्दी में आज बहुतसे लेखकों के पास ये चीजें हो सकती है जो शायद इससे भी ज्यादा संपन्न ढंगसे रहते है, लेकिन उनमें से बहुतो में और यशपाल मैं एक गहरा अंतर जरूर है। जहाँ दूसरे बहुतोंने इन सारी चीजों को ही लक्ष्य और उपलब्धि मान लिया। यशपाल ने इन्हें जरूरत से ज्यादा महत्त्व नहीं दिया। ये चीजें इनके लिए न तो कभी " स्टेटस् सिंबल " बनी और न हीं संपन्नता के फूहड़ प्रदर्शन का माध्यम। ऐसी चीजें सुविधाजनक और उपयोगी है, इसलिए वे है। "[6]

इसप्रकार उनके व्यक्तित्व पर विभिन्न विद्वानोंने अपने मत दिये हैं।

यशपाल साहित्यकार पहले थे क्रांतिकारी बाद में। अपने यौवन काल में वे क्रांति की ओर अवश्य आकर्षित हुए। लेकिन बादमें उन्होंने बुलेट [शस्त्र] की अपेक्षा बुलेटिन [साहित्य] की ओर ज्यादा ध्यान दिया और अपने क्रांतिकारी विचारों को साहित्य के विविध माध्यमोंसे प्रकट किया। बचपन से ही लेखन पठन एवं चिंतन मनन की ओर इनकी रूची थी।

अपने जीवन के पचास सालको लंबी अवधिमें यशपालने उपन्यास, कहानी, नाटक, आत्मकथा, निबंध - यात्रा-विवरण आदि साहित्यकी विविध विधाओं में सहजता से अपनी लेखनी चलायी।

यशपाल का कृतित्व

" यशपाल उन साहित्यकारों में से है जो कलम और तलवार चलाने में समान सफलता प्राप्त कर चुके हैं। क्रांतिकारियों के दल में सम्मिलित होनेपर भी उनकी कलम कभी नहीं रुकी। एक ओर पिस्तौल चलाना और दूसरी ओर कलम की गति, दोनों साथ - साथ चलते रहें।"[7]

यशपाल का साहित्यकार उनके क्रांतिकारी व्यक्तित्व-पर छा गया था। वे पहले साहित्यकार थे और बाद में और कुछ। यशपाल का रचना संसार बहुत विपुल और व्यापक है। हिंदी में उनसे पहले प्रेमचंद को छोडकर किसी भी दूसरे लेखकने इतने बड़े रचना-संसार की सृष्टी नहीं की थी। अलग अलग स्थितियों और वर्गोंका धर्म और संप्रदयों का विशाल पटल उन्होंने अपना लिया है।

यशपाल की कई रचनाओंकी अँग्रेजी अनुवादिका और उनकी अमरिकी शोध यात्रा आदि सारी विशेषताओं के कारण से यशपाल को प्रेमचंदजीकी परंपराका उत्तराधिकारी माना जा सकता है। प्रेमचंद जी की तरह यशपाल जी में सामाजिक न्याय के प्रति प्रति-बध्दता, मानव-व्यवहार की विचित्रता से सहानुभूति, साधारण जनता के प्रति अडीग आस्था होने के कारण उन्हें प्रेमचंद जी का

उत्तराधिकारी मानने में संकोच नहीं होता।

यशपाल - उपन्यासकार के रूप में

सन १९४१ से लेकर सन १९७४ तक के तैतीस वर्षों के कालमें यशपाल ने ग्यारह उपन्यासोंका निर्माण किया। प्रेमचंद के पश्चात् यशपाल ही क्रांतिकारी उपन्यासकार के रूपमें दूसरे है। अपने साहित्य के लिए उन्होंने राजनीति सामाजिक, ऐतिहासिक तथा प्रेम-विवाह तथा यौन संम्बधा आदि विषय चुने है।

विभिन्न राजनीतिक गतिविधियोंका चित्रण निम्न लिखित उपन्यासों में किया है - "दादा कामरेड", "देशद्रोही" "पार्टी - कामरेड", "मनुष्य के रूप", "झूठा सच", तथा "मेरी तेरी उसकी बात" आदि। साथही साथ "मनुष्य के रूप", "झूठा सच", मेरी तेरी उसकी बात" में मध्यवर्ग का पारिवारिक जीवन उनकी आर्थिक समस्याएँ, समाज के रीति-रिवाज, अंधश्रध्दा, धार्मिकता, सांप्रदायिकता, जातीयता, नारी की दयनीयता आदि का वर्णन मुख्य रूपसे किया है।

" दादा कामरेड", "मनुष्य के रूप", "बारह घंटे", "क्यों फसे" आदि उपन्यासोंमें यशपालजीने प्रेम, विवाह, और यौन सम्बन्धों के पारंपारिक दृष्टिकोनपर प्रहार किया है।

ऐतिहासिक विषयोंका प्रतिपादन "दिव्या" तथा "अमिता" उपन्यासोंमें किया है। "दिव्या" उपन्यासमें मौर्य साम्राज्य का ऱ्हास होने के पश्चात सामाजिक पतन का यथार्थ तथा सजीव

चित्र अंकित किया है। जो ऐतिहासिक वातावरण पर आधारित है। "अमिता" में मगध सम्राट अशोक की कलिंग विजय को विस्तार के साथ चर्चा करते हुए अमिता द्वारा सम्राट अशोक का -हृदय परिवर्तन दिखाया है।

संक्षेप में हम कह सकते है कि यशपाल के उपन्यासों का मुख्य विषय राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक शोषण से मनुष्य की मुक्ति, रहा है। जिसे ऐतिहासिकऔर आधुनिक जीवन से सम्बन्धित उपन्यास में स्पष्ट किया है।

कहानीकार यशपाल

एक विशिष्ट विचारधारा को लेकर कहानी सृजन करनेवालो में यशपाल का नाम लिया जाता है। उन्होंने अपनी कहानियों में मध्यवर्ग को समस्याओं के निरूपण हेतु आर्थिक, सांस्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक विश्लेषण का आधार लिया है। सन १९४० से लेकर सन १९५५ तक के अपनी साहित्य साधनाकें पन्द्रह वर्षों में यशपालनें अपने बारह कहानी संग्रहो में लगभग १५० कहानियों लिखपी। समय - समय पर प्रकाशित और असंगृहित कहानियों को मिला जुलाकर उनकी संख्या २२५ से अधिक हो सकती है।

यशपाल को कहानी कला के तीन उद्देश्य माने जाते है - समाज सुधार करना, व्यक्ति परिष्कार और जीवन को नया रूप देना है। स्वय: यशपालजीने एक मध्यमवर्ग से होने के कारण नारी के असहाय, शोषित, पिड़ित स्थिति कों अपने आँखोंसे

देखा था। उनकी कला उपयोगिता वादी की दृष्टिसे महत्वपूर्ण है। अपनी स्वतंत्र विचारों की अभिव्यक्ति को वे कहानी का माध्यम मानते थे।

नाटककार यशपाल

नाटककार के रूप में भी हमे यशपालजी का अलग परिचय प्राप्त होता है। उनका एकांकी संग्रह "नशे-नशे की बात" में तीन एकांकी नाटक संग्रहीत है - [१] "नशे नशे की बात" [२] "रूप की परख" और [३] "गुडबाई दर्दे दिल"। इसे यशपालने दृश्यात्मक कहानियों के रूप में लिखा है। इसमें रुढ़िवाद के प्रति विद्रोह है इन नाटकोंका उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं है, इनमें जीवनके विभिन्न पहलुओंपर गंभिरतापूर्वक विचार किया है।

"नशे-नशे की बात" में अध्यात्मिक नशेबाजों तथा उनके पुजारियों पर व्यंग्य किया है। "रूप की परख" में एक नारी के विवाह की समस्या को चित्रित किया है। यशपालने दर्शन चिंतन की दृष्टिसे "गुडबाई दर्दे दिल" प्रस्तुत किया है। यशपाल जी के नाट्य् साहित्य में रुढ़ि परंपरा के प्रति विद्रोह की भावना प्रधान है।

निबंधकार यशपाल

यशपालजी उपन्यास तथा कहानी परंपरा के साथ निबंध क्षेत्र में भी पीछे नहीं रहे। उन्होंने अपने निबंधोमें

भारतीय और पाश्चात्य सभ्यता की संस्कृति का विवेचन किया है। इससे उनके निबंध विचारात्मक है। उनका मार्क्सवादी रूप भी निबंधोंमे उभार आया है, जिस में उनके व्यक्तित्वकी झलक स्पष्ट होती है।

यशपाल के निबंध साहित्यको उनकी रचनाओं के आधारपर डॉ. सुनिलकुमार लवटेजी ने तीन भागोंमें विभाजित किया है।

१] राजनीतिक निबंध :

"गांधीवाद", "मार्क्सवाद", "रामराज्य", "स्वातंत्र्य" "क्रांति", "जेल", "सत्याग्रह", हड़ताल आदि ऐसे राजनीति से सम्बन्धित विषयोंपर निबंध की रचना की है।

२] हास्य निबंध :

"चक्कर क्लब", "बात-बात मे" आदि में विभिन्न महत्वपूर्ण समस्याओं की चर्चा की है। जिसे व्यंग्य का पुट दिया गया है।

३] कथात्मक निबंध :

इनका स्वरूप संस्मरणात्मक है। "सेवाग्राम" "ताश्कंद" "शिमला", "नैनीताल" आदि स्थानों के संस्मरणों के साथ कई समस्या मूलक कथाबीजों के माध्यमसे यशपालने अपने दर्शन को प्रकट किया है।

इसप्रकार यशपाल जी ने निबंध साहित्य में अपना योगदान दिया है।

यशपाल और उनका यात्रा - साहित्य

यशपालजी ने वैज्ञानिक दृष्टिकोनसे संघर्षमय जीवन में साहित्य लिखने की कोशिश की है। उन्होंने सात बार विदेश यात्रा की है और अपने देश के भीतर का कोई भी कोना अछूता नहीं छोड़ा।

यशपालने इंग्लैड, रूस, इटली, चेकस्लोवाकिया, रूमानिया, स्विजरलैण्ड, पूर्वी-पश्चिमी जर्मनी और अफगानिस्थान की यात्राएँ की। इन यात्राओंका वर्णन "लोहे की दीवार के दोनो ओर" में किया है। मॉरिशस की यात्रा का वर्णन "स्वर्गोद्यान बिना सॉप" में है। अपने देश की यात्राओं का भी वर्णन उन्होंने किया है। "देखा-सोचा-समझा" में सेवाग्राम, शिमला, से कुल्लू नैनीताल के यात्रा के अनुभव मिलता है।

उनकी यात्रा में पूँजीवादी व्यवस्था और साम्यवादी संस्कृति का अंतर स्पष्ट किया है। उनका यात्रा साहित्य समाज और राजनीतिक विविध रूपोंका तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

अनुवादक यशपाल

साहित्य की विभिन्न विधाओं की तरह अनुवादक के रूपमें भी यशपालने अपनी कलम की क्षमता का परिचय दिया है। जिसमें "पक्का कदम", "चीनी" "कम्युनिस्ट पार्टी", "जनानी ज्योढ़ी" "फसल", "चलनी मे अमृत", "जुलेखा" आदि है।

संपादक - पत्रकार यशपाल

यशपाल अपनी बात को निर्भिकता के साथ प्रस्तुत करनेंकी शैलीसे उनकी वैचारिक दृढता स्पष्ट होती है। तत्कालीन आन्दोलन के सन्दर्भ में जनमत प्रकट कर अपनी पत्रिका "विप्लव" को समाजभिमुख बनाया। जो समाज का दर्पण बन गयी थी। उसे देश में व्यापक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्रांति के अग्रदूत के रूपमें निकाला था। उसमें राष्ट्रहित के उद्देश्य के लिए पेश किये सिध्दान्तों और कार्यक्रमों की समीक्षा तथा विवेचना की थी।

"विप्लव" पत्रिका के अलावा "जनयुग", "धर्मयुग" "नई कहानियाँ", "कादम्बिनी", "उत्कर्ष" आदि में भी लेखन करते रहे। "विप्लव" पत्रिका निकालनेका उद्देश्य लोगों में राजनीतिक चेतना जागृत करना और मार्क्सवाद का प्रचार करना था। क्रांति की भूमिका और प्रवृत्ति तैय्यार करना उनका उद्देश्य है। इसलीए यशपाल का पत्रकार के रूपमें महत्त्व अक्षुण्ण है।

यशपाल और सिंहावलोकन

"सिंहावलोकन" आत्मकथा न होकर संस्मरणोंका लेखा जोखा है। यह "संस्मरण" तीन खण्डोमें विभाजीत है। "संस्मरण" आत्मकथात्मक शैली में लिखा है। इसमें हिंदुस्थानी समाजवादी प्रजातंत्र सेनाका इतिहास प्रस्तुत किया है। क्राति की चेष्टाओं को प्रस्तुत करनाही उनका उद्देश्य है।

निष्कर्ष

स्वर्गीय यशपालजी की जीवन यात्रा इस प्रकार दो रूपोमें व्यक्त होती है। अपनी युवावस्थामें हाथ में पिस्तौल लेकर घूमता यह आतंकवादी और क्रांतिकारी रिहाई के पश्चात् पिस्तौल फेंककर, कलम हाथ में लेता है और सामाजिक क्रांति का लाभ साहित्य, निर्माण में करता है। वे क्रांति और कलम के सिपाही थे। इन दो रूपोंसे ही वे सभी के वंदनीय रहे।

मार्क्सवाद का प्रचार, गांधीवाद का विरोध ये यशपाल के जीवन के प्रमुख अंग रहे। अंतिम समयतक वे अपने सिध्दान्तों के साथ घनिष्ठ रहे। मृत्यू भी कुछ समय के लिए इस महान साहित्यकार को दृढ़ धारणा देखने के लिए रुकी थी। इस महान साहित्यकार की सामाजिक प्रतिबध्दता देखकर उन्हें महान साहित्य-कारों में स्थान मिला। एक क्रांतिकारी के रूप में भी सफल रहें, वैसे ही साहित्यकार के रूप में उन्होने नाम कमाया। हिन्दी साहित्य को विविध विधाओं पर उन्होंने अपनी लेखनी चलाई। सामाजिक प्रतिबध्दता ही उनके साहित्य का मूल माना जाता है।

प्रथम अध्याय

संदर्भ सूची

१] यशपाल : सिंहावलोकन [प्रथम भाग] पृ. ८४

२] डॉ. चंद्रभानु सोनवणे : यशपालकी कहानियाँ कथ्य और शिल्प पृ. १४

३] डॉ. सुनीलकुमार लवटे : यशपाल एक समग्र मूल्यांकन पृ. २७

४] यशपाल : अभिनन्दन ग्रंथ पृ. १७

५] धर्मयुग : १६ जनवरी १९७७ पृ. ३२

६] मधुरेश : यशपाल के पत्र पृ. २७
[डॉ. सु. लवटे-यशपाल एक समग्र मूल्यांकन पृ. ३५ पर आधारित]

७] प्रो. वासुदेव : हिन्दी कहानी और कहानीकार पृ. २४७